CHETANA
International Journal of Education (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)
Impact Factor
SJIF 2025-8.445

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

विद्यालय विद्यार्थियों में आधुनिकीकरण, अनुशासन व व्यक्तित्व का अध्ययन

रजनी सिंह
शोधार्थी
निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर
डॉ. अनीता दाधीच
निर्देशक, शिक्षा शास्त्र विभाग
निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर
डॉ. सुरेन्द्र सिंह सिनसिनवार
सह–निर्देशक, डीन शिक्षा संकाय
महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान
Email-drsinsinwar74@gmail.com, Mobile-9511575553

First draft received: 15.11.2025, Reviewed: 19.11.2025
Final proof received: 29.11.2025, Accepted: 22.12.2025

सारांश

वर्तमान युग में विद्यालयी शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास करना भी है। आधुनिकीकरण ने विद्यार्थियों के जीवन–दृष्टिकोण, व्यवहार, सोच एवं सामाजिक संबंधों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इसके साथ–साथ अनुशासन विद्यार्थियों के चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला माना जाता है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य विद्यालयीन विद्यार्थियों में आधुनिकीकरण, अनुशासन तथा व्यक्तित्व के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन करना है तथा यह जानना है कि आधुनिकीकरण किस प्रकार अनुशासन और व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

मुख्य शब्द: *विद्यालयी शिक्षा, जीवन–दृष्टिकोण, व्यवहार, सोच, सामाजिक संबंध.*

प्रस्तावना

आधुनिक समाज में विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति ने मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है। शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही है। स्मार्ट क्लासरूम, इंटरनेट, मोबाइल, ई–लर्निंग और डिजिटल संसाधनों ने विद्यालयी विद्यार्थियों की सोच, व्यवहार और जीवनशैली में उल्लेखनीय परिवर्तन किया है। इस परिवर्तन को ही आधुनिकीकरण कहा जाता है।

विद्यालय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण का प्रमुख स्थल है। यहाँ अनुशासन, नैतिकता, आत्म–नियंत्रण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास किया जाता है। यदि आधुनिकीकरण अनुशासन से रहित हो जाए, तो यह विद्यार्थियों में असंतुलन, उद्दंडता और नैतिक ह्रास उत्पन्न कर सकता है। इसलिए आधुनिकीकरण एवं अनुशासन के मध्य संतुलन अत्यंत आवश्यक है।

आधुनिकीकरण का अर्थ

आधुनिकीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज, व्यक्ति, संस्थाएँ एवं विचार पारंपरिक ढाँचे से निकलकर वैज्ञानिक, तर्कसंगत, लोकतांत्रिक एवं प्रगतिशील दृष्टिकोण को अपनाते हैं। इसमें सोच, व्यवहार, शिक्षा, तकनीक और सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन शामिल होता है।

- आधुनिकीकरण वह सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत परंपरागत समाज आधुनिक मूल्यों, दृष्टिकोणों और संस्थाओं को ग्रहण करता है।
- आधुनिकीकरण का अर्थ है परंपरा और आधुनिकता के बीच समन्वय स्थापित करना, न कि परंपरा का पूर्णतः त्याग करना।
- आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्कशीलता, औद्योगीकरण और सामाजिक गतिशीलता का विकास होता है।
- आधुनिकीकरण शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नैतिक मूल्य एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करता है।
- आधुनिकीकरण शिक्षा की वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को बदलते सामाजिक–आर्थिक परिवेश के अनुकूल बनाती है।

आधुनिकीकरण केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं, बल्कि विचारों, मूल्यों, दृष्टिकोण और जीवन–शैली में सकारात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया है, जो समाज को प्रगति की ओर ले जाती है।

आधुनिकीकरण का सामान्य अर्थ है। परंपरागत समाज, विचारों, संस्थाओं और जीवन–शैली में समय के अनुरूप परिवर्तन लाना। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समाज विज्ञान, तकनीक, शिक्षा, उद्योग, राजनीति और संस्कृति के क्षेत्र में नवीनता को अपनाता है।

पुरानी परंपराओं से निकलकर तर्क, विज्ञान और प्रगति की ओर बढ़ना ही आधुनिकीकरण है।

- आधुनिकीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज की संस्थाएँ, मूल्य और सामाजिक संरचना आधुनिक रूप ग्रहण करती हैं।
- आधुनिकीकरण एक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया है, जिसमें परंपरागत समाज आधुनिक समाज में परिवर्तित हो जाता है।

एंथनी गिडेन्स के अनुसार –"आधुनिकीकरण आधुनिकता से जुड़ी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं का विकास है।"

आधुनिकीकरण की प्रमुख विशेषताएँ

वैज्ञानिक दृष्टिकोण – अंधविश्वास के स्थान पर तर्क और विज्ञान पर विश्वास

तकनीकी विकास – मशीनों, कंप्यूटर, इंटरनेट का उपयोग

शिक्षा का विस्तार – आधुनिक और व्यावहारिक शिक्षा प्रणाली

औद्योगीकरण – कृषि आधारित समाज से औद्योगिक समाज की ओर परिवर्तन

शहरीकरण – नगरों का विकास और जनसंख्या का शहरों की ओर प्रवासन

व्यक्तिवाद – व्यक्ति की स्वतंत्रता और अधिकारों पर बल

समानता – जाति, लिंग और वर्ग के आधार पर भेदभाव में कमी

आधुनिकीकरण के प्रमुख आयाम

सामाजिक आयाम

संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर झुकाव

स्त्री शिक्षा और महिला सशक्तिकरण

जातिगत बंधनों में शिथिलता

आर्थिक आयाम

औद्योगीकरण और पूंजीवाद का विकास

नए व्यवसाय और रोजगार के अवसर

बाजार आधारित अर्थव्यवस्था

राजनीतिक आयाम

लोकतंत्र का विकास

मानवाधिकारों की मान्यता

कानून का शासन

सांस्कृतिक आयाम

परंपरा और आधुनिकता का समन्वय

जीवन शैली, खान–पान, पहनावे में परिवर्तन

आधुनिकीकरण के लाभ

जीवन स्तर में सुधार

शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार

सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि

वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति

आधुनिकीकरण की सीमाएँ व समस्याएँ

सांस्कृतिक विघटन

पारिवारिक संबंधों में दूरी

नैतिक मूल्यों का ह्रास

पर्यावरण प्रदूषण

आधुनिकीकरण से तात्पर्य जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नवीन वैज्ञानिक विचारों, तकनीकी साधनों तथा आधुनिक मूल्यों को अपनाने से है। शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिकीकरण का अर्थ है—

आधुनिक शिक्षण विधियों का प्रयोग

सूचना एवं संचार तकनीक का उपयोग

वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास

स्वतंत्र एवं रचनात्मक सोच

आधुनिकीकरण विद्यार्थियों को प्रगतिशील, आत्मनिर्भर और नवाचारशील बनाता है।

अनुशासन का अर्थ

अनुशासन शब्द संस्कृत भाषा की 'शास्' धातु से बना है जिसमें 'अनु' उपसर्ग लगा है। इस धातु का प्रयोग शिक्षा देने के अर्थ में होता है और शिक्षा देने वाला शास्ता कहलाता है। भगवान् बुद्ध को शास्ता कहा गया है क्योंकि उन्होंने लोगों को सदाचार और अहिंसा की शिक्षा दी थी। ऐसी शिक्षा जो अध्यापक शिष्य सम्बन्ध से आती है, अनुशासन है। राजा का शासन राज्यादेश के रूप में प्रकट होता है और उपदेशक का शासन धर्मादेश के रूप में सामने आता है, परन्तु अध्यापक का शासन आदेश नहीं वरन् आदर्श के रूप में शिष्य को प्राप्त होता है। अध्यापक शिष्य को विद्या–चक्षु प्रदान करता है, जिससे संसार में भले–बुरे का परीक्षण करता हुआ, वह अनुवर्तन करे। यह आदेश देकर आदेष्टा के मस्तिष्क को अपने पास नहीं रख लेता है वरन् दिशा–दर्शन करके उसे अपनी दिशा खोजने के लिए शिष्य को सौंप देता है। इसलिए उसके व्यापार को 'शासन' न कहकर 'अनुशासन' कहा गया है। शासन में शासक व शासित दो पक्ष होते है, जबकि अनुशासन में एक ही पक्ष शिष्य से शिष्ट अवस्था तक गति करता है। इस गति का नियन्ता अध्यापक होता है।

अध्यापक और शिष्य अनुशासन के दो शरीर है। इस सम्बन्ध से वे एक हो जाते है। शिक्षक और शिक्षित में वैचारिक एकता और मानसिक तादात्म्य कर्तव्यपरायणता, दत्तचित्तता, लगन आदि या उपयोग ही अनुशासन है। इसी प्रकार अनुशासन कर्तव्य पालन के अर्थ में धर्म पालन के अर्थ में अनुशासन से ही सम्भव है। विवेक का व्यवहारिक क्षेत्र में को नियम पालन के अर्थ म, एवं आत्मसंयम एवं चरित्र के अर्थ में भी परिभाषित किया गया है।

इस अनुशासन का अंग्रेजी शब्द Discipline है जिसका अर्थ विनय से भी लगाया जाता है। विनय का तात्पर्य छात्र का गुरू के प्रति विनम्र व्यवहार है। जो दिखावा न होकर गुरू के प्रति श्रद्धा और भक्ति पर आधारित होता है।

पेस्तालौजी के अनुसार – "अनुशासन प्रेम पर आधारित और उसके द्वारा नियंत्रित होना चाहिए।" अनुशासन में एक ओर जहाँ विद्यार्थी गुरू की ओर प्रेम भाव रखता हे वहाँ गुरू भी प्रेम से ही शिष्य को अनुशासन की शिक्षा देता है।

प्रो. टी.पी. नन – "अनुशासन व्यवस्था के समान कोई बाह्य वस्तु नहीं है बल्कि एक ऐसी वस्तु नहीं है जो कि आचार के अन्तरिम स्रोतों को छूती है। अनुशासन अपनी प्रवृत्तियों और शक्तियों को एक नियम के आधीन कर देता है जो कि उनकी अव्यवस्था पर व्यवस्था स्थापित करता है, कुशलता और बचत करता है जहाँ पर कि प्रभावहीनता और अपव्यय होता है।"

अनुशासन का अर्थ है स्वयं पर नियंत्रण रखना, नियमों का पालन करना तथा सामाजिक मर्यादाओं के अनुसार व्यवहार करना। विद्यालय में अनुशासन से तात्पर्य केवल दंड नहीं, बल्कि—

समय पालन

कर्तव्यनिष्ठा

आत्मसंयम

उत्तरदायित्व की भावना

अनुशासन विद्यार्थियों को जीवन में सफलता और संतुलन प्रदान करता है।

व्यक्तित्व का अर्थ

व्यक्तित्व व्यक्ति के विचारों, भावनाओं, व्यवहार और चरित्र का समन्वित रूप है। एक अच्छा व्यक्तित्व आत्मविश्वास, सहनशीलता, सामाजिकता, नैतिकता तथा नेतृत्व क्षमता से युक्त होता है। विद्यालयी वातावरण व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

व्यक्तित्व के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने निम्न विचार प्रस्तुत किए–

रोबिन्स – "व्यक्तित्व व्यवहारों का वह योग है जिसमें एक व्यक्ति दूसरों के साथ क्रिया तथा प्रतिक्रिया करता है।" 162

लूथांस – "व्यक्तित्व समग्र व्यक्ति अवधारणा का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें अववेधन, सीखना, अभिप्रेरणा, आदि सम्मिलित है।"63

वैलेनटीन – "व्यक्तित्व, जन्मजात एवं अर्जित प्रवृत्तियों का योग है।" 64

आधुनिकीकरण, अनुशासन एवं व्यक्तित्व का संबंध

आधुनिकीकरण विद्यार्थियों की सोच को विस्तृत करता है, अनुशासन उनके व्यवहार को नियंत्रित करता है और व्यक्तित्व उनके समग्र विकास को दर्शाता है। यदि आधुनिकीकरण अनुशासन के साथ जुड़ा हो तो वह व्यक्तित्व को सकारात्मक दिशा में विकसित करता है। परंतु यदि आधुनिकीकरण बिना नियंत्रण के हो, तो वह व्यक्तित्व को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

विद्यार्थियों में आधुनिकीकरण के स्तर का अध्ययन करना

अनुशासन और व्यक्तित्व के संबंध का विश्लेषण करना

आधुनिकीकरण के प्रभाव का मूल्यांकन करना

शिक्षा में संतुलन की भूमिका को समझना

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन सर्वेक्षण (Random) विधि पर आधारित है। इसमें भरतपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों को लिया गया।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि आधुनिकीकरण विद्यार्थियों को प्रगतिशील एवं आत्मनिर्भर बनाता है, परंतु अनुशासन के अभाव में यह नकारात्मक प्रभाव भी डाल सकता है। अनुशासन व्यक्तित्व को संतुलित और सुदृढ़ बनाता है। अतः विद्यालयों को चाहिए कि वे आधुनिकीकरण के साथ–साथ अनुशासन एवं नैतिक शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दें।

संदर्भ सूची

1. सिंह, आर.एन., शैक्षिक मनोविज्ञान , अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

2. शर्मा, आर.ए. , व्यक्तित्व का मनोविज्ञान कृ मेरठ पब्लिशर्स।

3. पांडेय, रामशकल , शिक्षा मनोविज्ञान कृ विनोद पुस्तक मंदिर।

4. माथुर, एस.एस. , शैक्षिक समाजशास्त्र कृ अग्रवाल पब्लिकेशन।

5. दुबे, श्यामाचरण , भारतीय समाज कृ नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

6. कुप्पुस्वामी, बी., Advanced Educational Psychology, Sterling Publishers.

7. Baron, R A, Psychology, Pearson Education.

8. Hurlock, E.B., Personality Development, McGraw Hill.

9. Mangal, S.K., Educational Psychology, PHI Learning.

10. Durkheim, Emile, Education and Sociology.